नालन्दा

पृ० प्राचीनकाल में नालंदा विश्व विद्यालय शिक्षा का केन्द्र था

प्राचीन काल में शिक्षा का प्रमुख एवं सुविख्यात केन्द्र नालन्दा का विश्व विद्यालय था, जिसकी स्थापना का श्रेय गुप्त सम्राट, कुमार गुप्त (४१५-४५५) को ही प्राप्त ~~जिसकी स्थापना का श्रेय गुप्त सम्राट कुमार गुप्त~~ यह स्थान वर्तमान पटना नगर से लगभग ४० मील दूर है। कुमार गुप्त के पूर्व नालन्दा शिक्षा का केन्द्र वैसे ही था, किन्तु कुमार गुप्त शक्तारूढ़ होकर इस विद्यालय में विद्या अथवा शिक्षा के प्रोत्साहन में अभूतपूर्व योग दिया और उसे उच्च शिक्षा स्तर के एक अंतराष्ट्रीय महाविद्यालय का रूप प्रदान किया। इसके उत्थान के लिए पाँचवी शताब्दी के उदार गुप्त सम्राटों की दानशीलता विशेषरूप से उल्लेखनीय है। नालन्दा एक महाविहार था और इसमें सभी विद्यार्थी बौद्ध भिक्षुओं के रूप में विद्याध्ययन करने के लिए सुदूर देशों से भी आते थे।

उसमें शिक्षकों शिक्षार्थियों की कुल संख्या १०,००० हजार थी, जिसमें १५०० तो केवल अध्यापक थे। इस विद्यालय का प्रधानाचार्य कुलपति कहा जाता था, जिससे निम्न श्रेणी के आचार्य को पंडित कहा जाता था विश्व विद्यालय के अंतर्गत रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्न रंजक नामक तीन विशाल एवं भव्य भवन बने हुए थे इस विद्यापीठ में एक अत्यन्त विशाल पुस्तकालय भी था जो धर्मगंज कहलाता था। इस विश्व विद्यालय के अध्यापक बहुत विद्वान थे। एवं विश्व विख्यात होते थे, उनमें धर्मपाल, चन्द्रपाल एवं गुणमति, स्थिरमती शीलभद्र धर्मकीर्ति और पद्मसंभव के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इस विश्व विद्यालय में

विद्यार्थियों को रहने के लिए अनेक बिहार बने हुए थे। सम्राट तथा राज्य की प्रजा सभी लोग नालन्दा महाविहार को आर्थिक सहायता करते थे। इस महान विश्वविद्यालय के विषय में श्री आर० सी० मजूमदार का यह वक्तव्य भी उल्लेखनीय है।

"नालन्दा में उच्च शिक्षार्थियों को ही शिक्षा दी जाती थी और इसमें प्रवेश प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को कठोर परीक्षा देनी पड़ती थी। ह्वेनसांग ने लिखा है कि यहाँ का आचार्य और शिक्षार्थियों सभी उच्च कोटि की योग्यता और गुणों से सम्पन्न होते थे तथा उनकी कीर्ति सुन्दर क्षेत्रों में शीघ्र ही फैल गयी थी। विभिन्न नगरों के विद्वत विद्वान अपने शंका समाधान के लिए एक बड़ी संख्या में यहाँ आया करते थे और नालन्दा के स्नातक तो जहाँ कहीं भी जाते थे वहीं पर अपनी प्रतिष्ठा और आदर के लिए ~~विभूषित~~ विभूषित रहते थे। मुख्य रूप से यह हम कह सकते हैं कि नालन्दा विश्वविद्यालय उच्च श्रेणी की शिक्षा का महानतम आदर्श का प्रतीक बन गया था और यह भारत के उस बौद्धिक विकास का स्पष्ट परिचायक था जिसके फलस्वरूप भारत वर्ष समस्त एशिया का गुरु बन गया था।

सम्राट कुमार गुप्त के बाद अन्य गुप्त शासकों ने भी यहाँ बहुत से भवन बनवाये और नालन्दा के शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के व्यय के लिए अनेक प्रकार की अचल सम्पत्ति दान रूप में दे दी। ज्ञान के उच्चतम केन्द्र के रूप में नालन्दा की ख्याति इतनी दूर-दूर तक जा पहुँची कि यहाँ देश विदेश के सहस्त्रों विद्यार्थी आकर विद्याध्ययन करने लगे। अनेकानेक चीनी विद्वान इसकी कीर्ति को सुनकर यहाँ स्वयं विद्याध्ययन के लिए विद्यार्थी के रूप में रहते थे। इन विद्वानों ने अपने देश वापस पहुँचकर जो यात्रा वृतान्त लिखे आज तक उन्हीं

आज हम उन्हीं के आधार पर नालन्दा के महान आचार्यों और वहाँ के शिक्षा प्रणाली के विषय में आवश्यक परिचय प्राप्त करते हैं। ह्वेनसांग ने लिखा है कि यहाँ अध्यापकों का चरित्र सर्वथा निर्दोष एवं पवित्र था। वे सदाचार के सभी नियमों का पूर्ण तत्परता और ~~सिच्चाई~~ सच्चाई के साथ पालन करते और कराते थे। समस्त भारत में वे अपने ज्ञान एवं स्वचरित्रता के कारण प्रसिद्ध थे। नालन्दा महाविहार में प्रविष्ट होने के पूर्व प्रत्येक ~~अभ्यार्थी~~ विद्यार्थी को एक प्रवेश परीक्षा में अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण होना पड़ता था। यह ~~परीक्षा द्वार पंडित के द्वारा ली जाती थी~~ परीक्षा द्वार पंडित के द्वारा ली जाती थी। ह्वेनसांग का कथन यह है कि लगभग २० या ३० प्रतिशत से अधिक शिक्षार्थी इस परीक्षा को ही उत्तीर्ण नहीं कर पाते थे। ह्वेनसांग जो यहाँ पर्याप्त काल तक निवास करता रहा यहाँ के ज्ञानमय वातावरण चारित्रिक महानता से विशेष प्रभावित हुआ था इस विद्वान का कथन है कि महाविहार में प्रविष्ट होकर भी अनेक विद्यार्थी यहाँ की कठिनतम परीक्षाओं में असफल हो जाया करते थे। जो विद्यार्थी उन परीक्षाओं में उत्तीर्ण करने के असफल हो जाया करते थे। उनके ज्ञान एवं पांडित्य का सर्वत्र आदर किया जाता था।

सन् ६७३ ई० में बौद्ध धर्म का उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्य से इत्सिंग नामक एक अन्य चीनी यात्री यहाँ पर आया था। उसका अधिकांश समय नालन्दा महाविहार में ही व्यतीत हुआ था उसने यहाँ से लगभग ४०० ग्रंथों का संग्रह किया था जिन्हें वह अपने साथ चीन ले गया था। इत्सिंग के वृतान्त से भी यही परीलक्षित होता है कि यहाँ पर हजारों की संख्या में विद्यार्थी लोग शिक्षा प्राप्त करते थे। उसने लिखा है कि नालन्दा में जा प्रवेश पाने के लिए व्याकरण, न्याय, और अभिधर्मकोश का ज्ञान अपेक्षित था।

नालन्दा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के बाद विद्यार्थीगण वहाँ पर विशाल बौद्ध साहित्य का अध्ययन करते थे। इत्सिंग के मतानुसार नालन्दा विश्वविद्यालय के खर्च के लिए लगभग दो सौ से भी अधिक ग्राम राजाओं की ओर से लगे हुए थे। विद्यार्थी लोग अधिकतम भोजन के लिए चावल प्राप्त करते थे। ह्वेनसांग ने लिखा है कि जितने दिन वे नालंदा में ठहरे उन्हे सदैव ही महासाली चावलों का एक निश्चित परीमाण रूप तथा १२० जम्बीर दैनिक रूप से प्रदान किये जाते रहे। ह्वेनसांग ने यह भी लिखा है कि नालन्दा का रत्नोदधि नामक भवन तो नौमंजिला ऊँचा बना हुआ था। इसमें धर्मग्रन्थों का विशाल संग्रहालय था। रत्नसागर और रत्नरंजक नामक अन्य दोनों भवन भी इसी प्रकार विशाल थे। ह्वेनसांग और इत्सिंग के अतिरिक्त अन्य अनेक चीनी यात्री भी नालन्दा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए गए उनमें श्रमण हियेनचिन, थेइंग तथा कोरिया का एक भिक्षु आर्यवर्मन के नाम से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हियेन चिन सप्तम शताब्दी में नालन्दा आया था।

Scanned with CamSc

तथा यहां तीन वर्ष तक अध्ययन करता रहा था उसका भारतीय नाम प्रकाशमणि पड़ गया था कोरिया का आर्यवर्मन नालन्दा में पर्याप्त काल तक रहा था और यहीं से वह परलोक सिधारा था। सा शदी में चेहाग नामक चीनी भिक्षु नालन्दा में आया था और वह यहां आठ वर्ष तक निरन्तर अध्ययन करता रहा था

आठवीं शताब्दी का प्रारंभ नालंदा का प्रसिद्ध आचार्य शांतरक्षित तिब्बत का राजा बौद्ध धर्म की स्थापना के लिए तिब्बत प्रदेश में आमंत्रित किया जाता था यहां पर उसे पूर्ण स्वागत के साथ बोधिसत्व की उपाधि से विभूषित किया गया था। कालान्तर में नालंदा का एक अन्य आचार्य कमलशील भी इसी हेतु तिब्बत नरेश के आमंत्रण पर तिब्बत गया था

नालंदा विश्वविद्यालय 12वीं शताब्दी तक भारत का प्रधान शिक्षा केन्द्र बना रहा इसी समय विक्रमशिला नामक एक अन्य महाविहार की स्थापना के कारण नालंदा की कीर्ति कुछ मंद पड़ गयी थी उसमें ह्रास के चिन्ह उत्पन्न हो गये कालान्तर में मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी के आक्रमण के फलस्वरूप इस प्राचीन तथा महाविहार का अंतिम रूप से विनाश हो गया।

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना पांचवीं शताब्दी के प्रारंभ में गुप्त सम्राट सम्राट कुमार गुप्त के द्वारा हुयी थी लगभग 600 वर्षों तक यह शिक्षा का विश्व प्रसिद्ध केन्द्र बना रहा।

The end.

Scanned with CamSc